"वर्तमान शिक्षा व तकनीकी"

(शैक्षिक पहलू)

[1]PRIYA TIKKHA
[1]ASSISTANT PROFESSOR
[1]AMRAPALI GROUP OF INSTITUTES, HALDWANI (UTTARAKHAND)
[1]TIKKHA2009@GMAIL.COM

ABSTRACT

जहाँ वैश्विक महामारी कोविड-19 की वजह से सम्पूर्ण विश्व का पहिया थम सा गया, समस्त आर्थिक, सामाजिक गतिविधियों पर रोक लग गयी थी तभी हमारी शिक्षा व्यवस्था ने एक नया आयाम स्थापित किया। परिवर्तन शाश्वत है- देश,काल व परिस्थिति के अनुसार आज शिक्षा भी परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। ऐसा नहीं है कि ई-शिक्षा की उपयोगिता को पहले नहीं स्वीकारा गया परंतु यह समय की मांग है कि जब महामारी ने परंपरागत शिक्षण के सभी मार्ग अवरुद्ध कर दिए तब शिक्षण में इस विधा को अपनाया गया। शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक परिवाज्रक है।यदि इस विद्या के मंदिर का कायाकल्प होने पर पुजारी नहीं बदलते तो यह बदलाव अर्थहीन व प्रभावहीन हो जाता। अध्यापकों के समक्ष यह एक चुनौती के रूप में रहा किन्तु शीघ्र ही शिक्षकों ने इस विधा को आत्मसात किया और ऑन-लाइन शिक्षण को अपनाते हुए नवीन आयाम भी स्थापित किये।

Keywords: वैश्विक महामारी कोविड-19, आर्थिक, सामाजिक, तब शिक्षण, **ऑन-लाइन शिक्षण** |

INTRODUCTION

भारत में ई-शिक्षा अपनी शैशवावस्था में ही है, आवश्यक है कि इसकी राह में मौजूद विभिन्न चुनौतियों को समाप्त करने हेतु सुविधा रूपी बाण साधा जाए साथ ही शिक्षण की इस नवीन विधा में विकल्पों को बढ़ाया जाए।इंटरनेट के साथ ही टेलीविज़न,रेडियो कार्यक्रमों को भी माध्यम बनाया जाए व ग्रामीण,पहाड़ी क्षेत्र आदि जहाँ सुविधाओं का अभाव है वहाँ इसकी पहुँच सुनिश्चित की जाए।तकनीकी का शिक्षा में प्रभावी प्रयोग के लिए इसके तीन अंग के साथ कार्यान्वित करना होगा - समानता,सुनिश्चितता व पहुँच।

वर्तमान परिस्थितियों में सम्पूर्ण शिक्षण व्यवस्था सिर्फ इसी विधा पर टिकी हुई है।ऐसे परिवेश में समय-समय पर यह दृष्टिगोचर हो रहा है आज भी हमारे पास डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर पर्याप्त नहीं है। देश में अब भी उन विद्यार्थियों की संख्या सीमित है जिनके पास सुविधाएं है अतः आवश्यक है कि तकनीकी के तीनों अंगों का आकलन करते हुए विद्यार्थियों तक समान रूप से इसकी पहुँच को सुनिश्चित करें।जिससे कोई भी तबका इससे अछूता न रहे।

हाल ही में आयी शिक्षा **नीति-2020** में भी तकनीकी के विकास हेतु भरसक कदम उठाए जाने की पहल की गई है। विद्यार्थियों को प्रारंभ से ही कोडिंग, अनुसंधान आदि अनेक ऐसे मार्ग खोले गए है जो शिक्षा व्यवस्था में मील का पत्थर साबित हो सकते है। साथ ही समानता,सुनिश्चितता व पहुँच तीनों ही पक्षों को समाहित करने की चुनौती का भी सामना करने की कोशिश की गई है।

शिक्षा का आधार स्तम्भ- शिक्षक को टेक्नोफ्रेंडली बनाने हेतु **50 घंटे** का ऑन-लाइन प्रशिक्षण प्रोग्राम ,क्लस्टर प्रशिक्षण व शिक्षकों के नवीन अन्वेषण व प्रयासों को किसी भी रूप में पारितोषिक प्रदान करने पर भी जोर दिया गया है। राष्ट्र निर्माण हेतु ,मातृ-भाषा,भारतीय भाषाओं का विकास करने में भी तकनीकी की भूमिका अहम है।

CONCLUSION

तकनीकी आज वसुधैव कुटुम्बकम को विश्व कुटुम्बकम में परिवर्तित करने में अग्रसारित है।आज ब्लैकबोर्ड की जगह लैपटॉप व चॉक की जगह की-बोर्ड ने ले तो ली है परंतु हमारी शिक्षाव्यवस्था पर एक वृहत जनसमूह को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व है। यदि वर्तमान चुनौतियों की बात की जाए तो प्रत्येक व्यक्ति से यह अपेक्षा की जानी चाहिए कि वह इस लक्ष्य प्राप्ति में अपना सहयोग प्रदान करें।

"सम्भल-सम्भल कर रखना कदम इस जहाँ में,
नफ़्स-नफ़्स में यहाँ परिवर्तन की दरकार है"

LSIS

LAW SCHOLAR INDEPENDENT SOCIETY

CERTIFICATE
OF PUBLICATION

The LSIS EDUCATIONAL SOCIETY is hereby awarding this certificate to

PRIYA TIKKHA

In recognition of the publication of the article entitled "वर्तमान शिक्षा व तकनीकी" published in LSIS EDUCATIONAL REGISTERED SOCIETY
In Vol. 1 issue 2, August 2020

RID. 02

DATE
31 AUG 2020

BEST WISHES

WITH BEST WISHES

LAW SCHOLAR INDEPENDENT SOCIETY

lsiaassociation1@gmail.com

LSIA.IN

Made with PosterMyWall.com